UNIQUE STUDY POINT
A FREE ONLINE EDUCATIONAL PORTAL
WWW.UNIQUESTUDYONLINE.COM
CLICK TO JOIN USP WHATSAPP GROUP

CBSE Class 10 English The Sermon at Benares Summary

The Sermon at Benares Summary in both english and hindi is available here. This article starts with a discussion about the author and then explains the chapter in short and detailed fashion. Ultimately, the article ends with some difficult words and their meanings.

The Sermon at Benares – About the Author

Betty Renstaw's was an American writer. She was born in October. 2, 1921 in the Renstaw family. She died on April 30, 1999, at the age of 77.

Short Summary of The Sermon at Benares

'Sermon At Benares' is the story of an unfortunate woman Kisa Gotami. She had lost her only one. In her grief, she carried the dead body of her son from one place to another. In the end, she came to Lord Buddha. She needed the medicine that could cure her son. The Buddha asked her to bring him a handful of mustard seeds from a house where no one had lost a child, husband, parent or friend. Kisa Gotami didn't find a house where some beloved one had not died in it. She thought to herself that it was the fate of mankind. Death was inevitable. Nobody can avoid dying. The world is afflicted with death and decay. The wise don't grieve. `He who has overcome all soon will become free from sorrow, and be blessed.

Summary of The Sermon at Benares in English

Gautama Buddha was born in a North Indian royal family. He was born as a prince. Moreover, his childhood name was Siddhartha Gautama. He was sent to a faraway place to study Hindu sacred scriptures at the age of twelve. Then, upon returning after four years, he got married to a princess.

Soon, they both were blessed with a son. Then, they continued to live the royal life for about ten years. The Royals were shielded from the unpleasant experiences of the world.

However, one day, on his way to hunt, the Prince met a sick man, an aged man, a funeral procession and a monk who was begging for. Such experiences acted as an eye-opener for him Hence, he left all the royalty behind to seek a higher sense of spiritual knowledge.

Then, when he attained salvation, he began preaching. His first sermon given in the city of Benares. There was a lady whose name was Kisa Gotami whose son has died. She was suffering from unending pain. Thus, she went from house to house looking for medicine to make her son alive. People thought that the lady has lost her senses.

However, one day, she met a man who directed her towards Lord Buddha. He felt that Buddha could possibly have a solution for her problem. Then, Buddha asked her to look for mustard seeds and the seeds must be procured from a house where there had been no death. Filled with hope, Kisa Gotami once again went on a search from house to house but she could not find mustard seeds from a house according to Buddha's condition.

Thus, she was disheartened and sat at the edge of the road where she realised how selfish she had been. She realised the fact that men are mortal. Also, no one could escape the cycle of life. This was the only fact that Buddha wanted her to understand.

According to Lord Buddha, feelings of grief and sorrow increases man's pain and suffering. It serves no other purpose. Moreover, it deteriorates the health. Thus, a wise person who is fully aware of nature's functioning must not grieve at something bound to happen. This is the only way in which he can be happy and blessed.

Conclusion of The Sermon at Benares

The first sermon of Lord Buddha at Benares was the holiest. It ended the suffering of a lady who had lost her son. She accepted the truth and thus freed from pain.

Summary of The Sermon at Benares in Hindi

गौतम बुद्ध एक उत्तर भारतीय शाही परिवार में एक राजकुमार के रूप में पैदा हुए थे और उनका नाम सिद्धार्थ गौतम रखा गया था। हिंदू पवित्र ग्रंथों का अध्ययन करने के लिए जब वह बारह साल का था, तो उसे एक दूर स्थान पर भेजा गया था और चार साल बाद लौटने पर, उसने एक राजकुमारी से शादी कर ली। जल्द ही, उन दोनों का एक बेटा हुआ और वे लगभग दस वर्षों तक शाही जीवन जीते रहे। जब तक राजकुमार एक बीमार आदमी, एक वृद्ध व्यक्ति, एक अंतिम संस्कार जुलूस और भिक्षा की तलाश में एक भिक्षु से मुलाकात नहीं करते थे, तब तक दुनिया के सभी अप्रिय अनुभवों से रॉयल्स को ढाल दिया गया था। इन अनुभवों ने उनके लिए आंख खोलने वाले के रूप में काम किया और इस तरह, उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान की उच्च भावना हासिल करने के लिए सभी रॉयल्टी को पीछे छोड़ दिया।

गौतम बुद्ध लगभग सात साल तक आत्मज्ञान की खोज में चले गए, इससे पहले कि वह एक पीपल के पेड़ के सामने आए और जब तक वे जाग नहीं गए, तब तक इसके नीचे बैठना चुना। जब उन्हें आखिरकार 7 दिनों के बाद मोक्ष की प्राप्ति हुई, तो उन्होंने पेड़ को tree बोधि वृक्ष '(जिसका अर्थ

बुद्धि का वृक्ष है) के रूप में पुनः प्राप्त करने का फैसला किया और उन्हें स्वयं' बुद्ध '(जिसका अर्थ है जागृत) कहा जाने लगा। यहां तक कि उसने अपने नए अहसासों का प्रचार करना शुरू कर दिया और उसका पहला उपदेश बनारस शहर में दिया गया। बनारस शहर को पवित्र माना जाता है क्योंकि यह गंगा नदी के तट पर रहता है। पहला उपदेश जो उन्होंने दिया था, वह संरक्षित था और आज तक प्रसिद्ध है (यह नीचे भी दिया गया है)। यह मनुष्य के आसन्न कष्टों को एक नया परिप्रेक्ष्य देता है।

यह किसा गोतमी नामक एक महिला के बारे में बात करता है, जिसका बेटा हाल ही में मर गया था। असहनीय दर्द और दुःख के साथ, वह अपने बेटे को एक आश्चर्य की दवा के लिए घर-द्वार ले गई जो उसके बेटे को वापस ला सकती थी। स्पष्ट रूप से, सभी ने सोचा कि महिला ने स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता खो दी थी। घर-घर जाकर, आखिरकार वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में सामने आई, जो किसी भी दवा की पेशकश नहीं कर सकता था, लेकिन उसे सकमुनि, बुद्ध के पास ले गया। आशा से भरकर, महिला ने गौतम बुद्ध का दौरा किया और उनसे अपने बच्चे के इलाज के लिए भीख माँगी।

जैसे आदमी ने कहा, गौतम बुद्ध के पास एक उपाय था। उन्होंने किसा गोतमी से एक मुट्ठी सरसों प्राप्त करने के लिए कहा। आशा के साथ बहाल, किसा गोतमी ने सोचा कि यह एक बहुत ही सरल कार्य है जब तक कि भगवान बुद्ध ने यह शर्त न लगा दी हो कि "सरसों-बीज को एक ऐसे घर से लिया जाना चाहिए, जहां किसी ने भी एक बच्चे, पति, माता-पिता या दोस्त को नहीं खोया है।"

एक बार फिर, किसा गोतमी घर-घर गई, लेकिन इस बार, वह सरसों के बीज की तलाश में थी। कई के पास सरसों के दाने थे, लेकिन उनमें से कोई भी भगवान बुद्ध की उस शर्त को पूरा नहीं कर सका, जिसमें परिवार में किसी की मौत नहीं हुई थी। पूछे जाने पर, लोगों ने उनसे उनके गहरे दुखों को याद न करने का अनुरोध किया। दुर्भाग्य से, वह अपने बेटे के लिए सरसों प्राप्त करने के लिए एक उपयुक्त घर नहीं पा सकी।

किसा गोतमी के लिए सारी आशा खो गई थी और इस तरह, पीड़ा और पीड़ा में, उसने खुद को सड़क के किनारे पर एक जगह पर पाया। उसने लगातार शहर की रोशनी को झपकाते हुए देखा और उन्हें तब तक देखा जब तक चारों तरफ सिर्फ अंधेरा था। गहरे प्रतिबिंब के बाद, उसने महसूस किया कि आदमी की किस्मत इन शहर की रोशनी की तरह थी जो बार-बार टिमटिमाती और बुझती थी। जन्म और मृत्यु का चक्र प्रकृति के काम करने का तरीका है। अचानक, वह सचेत हो गई कि उसके दुःख में वह कितना स्वार्थी था और जो पैदा हुआ था, उसे अनंत काल तक आराम करना चाहिए। पुरुष नश्वर हैं और जो अमर हैं, वे सभी सांसारिक सुखों से मुक्त हैं।

भगवान बुद्ध के अनुसार, नश्वर लोगों का जीवन परेशान है क्योंकि उन्होंने इस तथ्य के साथ शांति नहीं बनाई है कि जो पैदा हुआ है, उसे अनंत काल तक आराम करना चाहिए। ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे जीवित व्यक्ति मृत्यु का सामना करने से बच सके। जैसे पके फल के गिरने का खतरा अधिक होता है, वैसे ही एक वृद्ध नश्वर मरने के लिए बाध्य होता है। जैसे सभी मिट्टी के बर्तन

किसी बिंदु पर टूटते हैं, वैसे ही पुरुष भी करते हैं। बूढ़ा हो या जवान, मूर्ख हो या बुद्धिमान, मौत कोई नहीं छोड़ता।

मौत के काम का एकमात्र तरीका जीवित व्यक्ति से व्यक्ति को वापस लेना है, यानी व्यक्ति का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। मौत पर किसी का नियंत्रण नहीं है, न तो कोई पिता अपने बेटे को बचा सकता है और न ही उसके रिश्तेदारों को। जिस तरह एक बैल को मारने के लिए कत्लखाने में ले जाया जाता है, उसी तरह मौत भी नश्वर के साथ होती है, किसी को पीछे नहीं छोड़ती। इस प्रकार, जो इस सत्य को जानता है और अपने नुकसान पर शोक नहीं करता है, वह वही है जिसे भगवान बुद्ध ने बुद्धिमान कहा है।

भगवान बुद्ध के अनुसार, किसी को शोक, रोना या दुखी नहीं होना चाहिए जो इसके लिए बाध्य है, यह मनुष्य को मन की शांति प्राप्त करने से दूर रखेगा। यह केवल पीड़ा और पीड़ा को कई गुना बढ़ा देगा जिससे शारीरिक कमजोरी और अधिकता होगी, दु: ख की कोई भी राशि मृतकों को वापस नहीं लाएगी। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति को दुःख और शोक जैसे अतीत की भावनाओं को आगे बढ़ाना चाहिए क्योंकि यह एकमात्र रास्ता है जो मोक्ष के मार्ग की ओर जाता है।

Difficult Words and their Meanings

Sacred = pious (पवित्र); **sculptures** = **religious books** (धार्मिक पुस्तकें); **befitted** = suited (उचित था); **royalty** = kingly family (शाही परिवार); **heretofore** = till then (तब तक); **shielded** = protected (रक्षा की); **chanced-upon** = saw by chance (संयोग से देखा); **funeral procession** = procession of a dead body for cremation (शव – यात्रा); **monk**= mendicant (भिक्षु); **alms** = beggings (भिक्षा)l; **enlightenment** = spiritual knowledge (आध्यात्मिक ज्ञान); **witnessed** = saw (देखा) ; **vowed** = swore (कसम खाई) **Preached** = gave sermons (उपदेश दिया);

sermon = preaching (उपदेश); **dipping /paces**=place where people take bath (नहाने के स्थान); **preserved** = protected (रक्षा की); **reflects** = shows (दिखाना**)inscrutable** = mysterious (रहस्य पूर्ण); **at length** = in the end (अंत में); **physician** = doctor (डॉक्टर); **repaired**=(here) went (गया); **mustard-seed** = an oil seed (सरसों); **procure** = get (प्राप्त करना); **grief** = sorrow (दुःख); **weary** = tired (थक गई); **hopeless** = in despair (दुःख में); **flickered up** = shone (चमका); **extinguished** = put out (बुझ गया); **desolation** = deep sorrow (गहरा दुःख); **immortality** = deathlessness (अमरत्व); **surrendered** = submitted (हार मान लेना /समर्पण करना); **mortals** = human beings (नश्वर)

Earthen vessels = pot made of baked clay (मिट्टी का बर्तन); **potter** = one who makes pots (कुम्हार); **overcome** = controlled by (नियंत्रित होना); **depart** = go away (चले जाना); **kinsmen** = relatives (रिश्तेदार); **mark** = look (देखना); **lamenting** = grieving (अफ़सोस करना); **slaughter** = killing (वध करना); **afflicted with** = affected by (पीड़ित होना); **decay** = rotting/**degeneration** (गलत /पतन होना); **pale** = yellow (पीला); **composed** = **controlled** (शांत); **blessed** = the one who gets blessing (जिसे आशीर्वाद मिला हो)